# कविग्राम

वर्ष 2, अंक 12, दिसम्बर 2021

## गुलाबी सर्दी

# कविग्राम

वर्ष 2, अंक 12, दिसम्बर 2021

परामर्श मण्डल
सुरेन्द्र शर्मा
अरुण जैमिनी
विनीत चौहान

सम्पादक
चिराग़ जैन

सह सम्पादक
मनीषा शुक्ला

कला सम्पादक
प्रवीण अग्रहरि

प्रकाशन स्थल
नई दिल्ली

प्रकाशक
कविग्राम फाउण्डेशन

उपरोक्त सभी पद मानद तथा अवैतनिक हैं।
कविग्राम में प्रकाशित लेख तथा कविताओं में व्यक्त विचार उनके रचयिताओं की निजी राय है।

मूल्य : निःशुल्क

आवरण सज्जा : चिराग़ जैन

इंटरनेट लिंक

पत्रिका में जहाँ भी ऐसा चिह्न बना है वह एक इंटरनेट लिंक है उसे स्पर्श करने पर, संबंधित पृष्ठ खुल जाएगा

इंटरनेट लिंक

kavigram.com
TheKavigram@gmail.com
kavigramfoundation
facebook.com/kavigram
youtube.com/c/KaviGram
8090904560
thekavigram
thekavigram

# भीतर के पृष्ठों पर

**सम्पादकीय** / सर्दी के दो रंग / चिराग़ जैन / 04
**आवरण कथा** / गुलाबी सर्दी / मनीषा शुक्ला / 05
**वटवृक्ष** / जाड़े की धूप / सर्वेश्वर दयाल सक्सेना / 10
**ग़ालिब की गली** / बहारें जाड़े की / नज़ीर अकबराबादी / 11
**गुलमोहर** / चांदनी बहकी हुई है / कीर्ति काले / 13
**फुलवारी** / सर्दी नैनीताल गयी / ज्ञानप्रकाश आकुल / 14
**उत्साह** / ओ शरत! / रामधारी सिंह दिनकर / 15
**विनोद** / ऐसे जाड़े / साग़र ख़य्यामी / 16
**लोक-लालित्य** / हम आजु नहइबै ना / रमई काका / 18
**ठण्डी के दोहे** / थर-थर काँपे गात / अशोक मधुप / 19
**कवि-कुनबा कलैण्डर** / दिसम्बर / 20
**कवि-सम्मेलन संग्रहालय** / काका का पत्र अल्हड़ के नाम / 22
**सार्थक पहल** / काव्य कॉर्नर / 23
**कवितैव कुटुम्बकम्** / ख़ास तौर से चौरासी / डॉ. अशोक चक्रधर / 25
**कोकिला कुल** / सुभद्रा कुमारी चौहान / सोनरूपा विशाल / 29

**रपट**

काका हाथरसी समारोह / 32
प्रवीण पर्व / 35

**अशआर**

ख़ुर्रम अफ़क़र / 09
अमित शर्मा मीत / 17
बेदिल हैदरी / 21
अतहर नासिक / 24
उम्मीद फ़ाज़ली / 31

# सर्दी के दो रंग

जाड़े की धूप का सेवन दुनिया के किसी भी नशे से ज़्यादा नशीला होता है। पटनीटॉप की ख़ूबसूरत वादियों में खिली हुई धूप में मूली पर नींबू-नमक का चटकारा स्वर्ग के सुख की अनुभूति कराता है। रात भर की नींद के बावजूद सुबह रजाई से लिपट कर सोए रहने के बहाने तलाशना किसे नहीं भाता। चाय के कप से जब ठण्डी हथेलियों की सिकाई की जाती है तो चाय का स्वाद दोगुना हो जाता है। मीठी-मीठी धूप सेकते समय जब हवा का कोई झोंका हल्की सी चपत लगाकर जाता है तो ऐसा लगता है मानो कोई माँ अपने बच्चे को आलस छोड़कर जाग जाने के लिए कह रही हो। सर्दी के मौसम में जब साँस के साथ मुँह से धुआँ निकलता है तो रोम-रोम ताज़गी से भर जाता है।

पाँच सितारा होटल के कमरे में ओवरकोट लपेटकर, ब्लोअर चलाकर जब काँच के उस पार बर्फ़ पड़ती दिखाई देती है तो ऐसा जान पड़ता है कि सितारों का क़ाफ़िला आसमान से धरती पर उतर रहा है। सर्दी का यह गुलाबी रंग हर किसी को बहुत पसन्द आता है। लेकिन इस सीन में से यदि कमरा, ओवरकोट और ब्लोअर निकाल दिया जाए और बर्फ तथा आपके बीच से काँच की दीवार हटा दी जाए तो फिर इसी सर्दी से आपके गुलाबी होंठ नीले पड़ने लगते हैं। फिर आपको सर्दी गुलाबी नहीं, नीली लगने लगती है।

ऐसी स्थिति में मुँह से धुआँ नहीं निकलता, बल्कि पसलियों के टकराने की आवाज़ सुनाई देती है। ऐसे में बर्फ़ के सितारे तीर सरीखे चुभते हैं। पूस की रात में खुले आसमान के नीचे रात गुज़ारने को मजबूर बेघरी के लिए हवा सुखद नहीं, जानलेवा होती है। ऐसे में सर्दी से मौसम का गुलाबी रंग तो दूर की बात है, गुलाबी होंठों का रंग भी नीला पड़ जाता है।

कविता का दायित्व है कि वह किसी मौसम के इन दोनों रंगों को साक्षी भाव से देखे। कविता का कर्त्तव्य है कि वह ताज़गी की सरगम भी लिखे और पसलियों की कड़कड़ भी लिखे। कविग्राम का यह अंक सर्दी के इन दोनों रंगों से सुसज्जित है। चिराग़ जैन

# गुलाबी सर्दी

**मनीषा शुक्ला**

बरषा बिगत सरद ऋतु आई
लछिमन देखहु परम सुहाई
फूले कास सकल महि छाई
जनु बरसा कृत प्रगट बुढ़ाई
गोस्वामी तुलसीदास

अर्थात् हे लक्ष्मण ! देखो वर्षा ऋतु बीत गयी है और मनमोहक शरद ऋतु का आगमन हो चुका है। कास के फूलों से ढकी हुई पृथ्वी, वृद्धा वर्षा के सफ़ेद खुले हुए बालों-सी लगती है।

भारत की चारों ऋतुओं में सबसे ठंडी 'शरद ऋतु' के आगमन की सुगबुगाहट इन दिनों वातावरण में महसूस हो रही है। हर तालाब में कमल खिलने लगे हैं, सब्ज़ीवालों की रेहड़ी पर सब्ज़ियों की रंगत लौटने लगी है, हल्के-हल्के रंग-बिरंगे स्वेटर निकल आये हैं, धूप कुछ गुनगुनाती-सी मिलती है; छत पर हवा के पाँव ठिठककर चलते हैं... और सुबह-सुबह फूलों के जिस्म पर ओस के गीले चुम्बन भी अब दिखायी देने लगे हैं। दिल्ली का झुकाव मौसम के इस रंग की ओर कुछ ज़्यादा ही है। मुझे दिल्ली में रहते कुल 12 वर्ष हो गये। मग़र इस मौसम का पूर्वानुमान करने में मैं आज तक असफल रही हूँ। कभी तो बिना किसी आहट के रातों-रात पूरी दिल्ली सर्दी के दुशाले में समा जाती है और कभी-कभी उस वक़्त तक भी सूरज की तपिश से इसे राहत नहीं मिलती, जिस वक़्त शेष भारत जाड़े के गुलाबी रंग में नहा रहा होता है।

विज्ञान के अनुसार पृथ्वी जब उत्तरी गोलार्द्ध पर चक्कर लगाती है तो शीत ऋतु आती है और किसी संवेदनशील हृदय की मानें तो विरह के तीव्र ज्वर के बाद मिलनेवाले प्रेम का शीतल स्पर्श होती है -शरद ऋतु।

प्रकृति के मनोविज्ञान की ओर इंगित करते हुए संवेदना के मर्मज्ञ कवि अज्ञेय लिखते हैं-

ऊँघ रहे हैं तारे
सिहरी सिरसी
ओ प्रिय कुमुद ताकते
अनझिप क्षण में
तुम भी जी लो
शरद चान्दनी बरसी
अँजुरी भरकर पी लो

एक तो शरद ऋतु का रूप-रंग और उस पर चान्दनी का दूधिया उबटन! आह...ऐसे में किसी भी संवेदनशील हृदय से कविता का निर्झर फूटना स्वाभाविक है। पहाड़ों का सौंदर्य भी इस मौसम में दूना ही हो जाता है। रवींद्र जैन जी ने 'राम तेरी गंगा मैली' फ़िल्म में राग पहाड़ी पर आधारित इस गीत के माध्यम से सर्दी के मौसम को हर मौसम पर भारी कर दिया-

हुस्न पहाड़ों का
क्या कहना
कि बारहों महीने
यहाँ मौसम जाड़ों का

इस मौसम का ज़िक्र होते ही मुझे एक कहानी भी याद आती है। जिसमें किसी भूखे व्यक्ति को एक कलाकार बाँसुरी सुनाना चाहता है। मग़र उस भूखे व्यक्ति की अन्तड़ियों से उठता शोर संगीत से अनुनाद नहीं कर पाता और वह कलाकार की बाँसुरी तोड़कर पास बह रहे एक नाले में फेंक देता है। वास्तव में हर परिस्थिति की एक प्रतिकूल परिस्थिति होती ही है। सुर्ख़ लाल रंग अगर एक ओर नये जीवन की उमंगें लेकर हौले-हौले पाँव धरनेवाली दुल्हन के लिए सौभाग्य का प्रतीक है तो असमय ही सफ़ेद रंग की नीरसता स्वीकारने वाली विधवा के लिए आजीवन जीवित रहनेवाली एक टीस भी है।

इस मुए सर्दी के मौसम का भी यही हाल है। जिसके पास रजाई है, उसे रजाई ओढ़कर ठंड से स्वयं को बचाना भर है; और जिसके पास नहीं है उसके लिए ठंड में स्वयं को जीवित रखना एक चुनौती है। इस 'बचाने'

और 'जीवित रखने' के अंतर को ही अलग-अलग कवियों ने अपनी कविताओं में शरद ऋतु के लिए परिभाषित किया है। पद्मावत में मलिक मुहम्मद जायसी ने इस ऋतु की कामुकता का वर्णन करते हुए लिखा है-

आइ सरद ऋतु अधिक पियारी
नौ कुवार कार्तिक उजियारी
पद्मावती भै पूनिव कला
चौदह चांद उए सिंगला
एहि ऋतु कंता पास जेहि सुख तिन्हके हीय माँह
धनि हँसि लागै पिय गले धनि गल पिय कै बाँह

शरद चान्दनी के अप्रतिम रूप को निहारते हुए हमारे कुनबे के वरिष्ठ कवि हेमन्त श्रीमाल लिखते हैं-

इस कदर मादक नहीं था मरमरी कोमल बदन
उम्र में शामिल हुआ है एक अल्हड़ बाँकपन
रूप में ख़ुद आ घुली है, ये शरद की चान्दनी
शोख़, चंचल चुलबुली है ये शरद की चान्दनी

तो वहीं अदम गोंडवी साहब ने इस सर्द मौसम के आगे घुटने टेकने की विवशता को शब्द देते हुए लिखा है -

भटकती है हमारे गाँव में गूंगी भिखारिन-सी
सुबह से फ़रवरी बीमार पत्नी से भी पीली है

वहीं 'दिनमान' के सम्पादक और दूसरे सप्तक के कवियों में शुमार रहे रघुबीर सहाय ने व्यवस्था पर कटाक्ष करते हुए लिखा है-

फिर जाड़ा आया
फिर गर्मी आयी
फिर आदमियों के पाले से,
लू से मरने की ख़बर आयी
न जाड़ा ज़्यादा था, न लू ज़्यादा
तब कैसे मरे आदमी?
वे खड़े रहते हैं तब नहीं दिखते,
मर जाते हैं तब लोग जाड़े और लू की मौत बताते हैं

दूसरी ओर सर्दी के मौसम की लज़्ज़त को शायरी की ज़ुबां देते हुए निदा फ़ाज़ली साहब कहते हैं-

कुहरे की झीनी चादर में यौवन रूप छिपाए
चौपालों में मुस्कानों की आग उड़ाती जाए

कविता को फ़कीरी की तरह जीनेवाले बाबा नागार्जुन आवश्यकता और ऐश्वर्य की बारीक रेखा को शब्द देते हुए कहते हैं-

ढके जा रहे
देवदार की हरियाली को अरे दूधिया झाग
ठिठुर रहीं उँगलियाँ
मुझे तो याद आ रही आग
गरम-गरम ऊनी लिबास से लैस
देव-देवियाँ देख रही होंगी अवश्य हिमपात
शीशामढ़ी खिड़कियों के नज़दीक बैठकर
सिमटे-सिकुड़े नौकर-चाकर चाय बनाते होंगे
ठंड कड़ी है
सर्वश्वेत पार्वती प्रकृति निस्तब्ध खड़ी है
बरफ़ पड़ी है

इसी संदर्भ में केदारनाथ सिंह संवेदनाओं को आँच देने के उद्देश्य से लिखते हैं-

ईश्वर
इस भयानक ठंड में
जहाँ पेड़ के पत्ते तक ठिठुर रहे हैं
मुझे कहाँ मिलेगा वह कोयला
जिस पर इंसानियत का ख़ून
गरमाया जाता है

कविता का काम समाज की संवेदनाओं को दुरुस्त करना है। कविता का काम हर उस दृश्य को बार-बार आपकी आँखों के सामने रखना है जिससे आप अक्सर आँखें चुराते हैं। कभी समय के अभाव का, तो कभी किसी अन्य विवशता का बहाना करके। ये सर्द मौसम सिर्फ़ इसलिए नहीं आता कि हम सन्दूक में भरे गर्म कपड़े निकाल लें, हीटर-ब्लोअर चला लें और मूँगफली तोड़ते हुए इतवार अपनी बालकनी में

फ़ुर्सत करें। ये सर्द मौसम इसलिए भी आता है ताकि इंसानियत की नब्ज़ टटोली जा सके। ये देखा जा सके कि कोहरे की सल्तनत को चुनौती देने वाली एक भी गर्म किरण बाक़ी है कि नहीं। ये प्रकृति जानना चाहती है कि जब साँस का सामान बननेवाली हवा, मौत का सर्द फ़रमान बनकर आती है तो अहसासों की गर्मी कितनी देर टिकती है उसके आगे।

माना कि सर्द मौसम आने को है, मग़र कविता अपने पाठकों से यह आश्वस्ति चाहती है कि जहाँ कहीं भी कोई हथेली ठिठुरती मिलेगी, उसे आगे बढ़कर दो हाथ थाम लेंगे और अपनी गर्माहट से उसे मनुष्यता के जीवित होने का एहसास कराएंगे। तो आइए, इस बार रेलवे प्लेटफार्म पर अख़बार ओढ़कर सोते किसी बच्चे से मुँह न फेरा जाए। इस बार एक छोटी चादर में सड़क किनारे ख़ुद को और अपने बच्चे को ज़िंदा रखने की जद्दोजहद करती ममता से आँखें न चुराई जाएँ। इस बार नंगे बदन मज़दूरी करते किसी मज़दूर को देखकर अनदेखा न किया जाए। इस बार की सर्दियों में किसी मीठे किसी गीत को आवाज़ देना चाहे भूल जाएँ आप... मग़र मदद की किसी गुहार को अनसुना मत कीजिएगा। मनीषा शुक्ला

# जाड़े की धूप

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

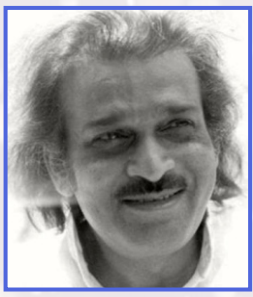

बहुत दिनों बाद मुझे धूप ने बुलाया।

ताते जल नहा, पहन श्वेत वसन आयी
खुले लान बैठ गयी दमकती लुनाई
सूरज खरगोश धवल गोद उछल आया।
बहुत दिनों बाद मुझे धूप ने बुलाया।

नभ के उद्यान-छत्र तले मेज; टीला,
पड़ा हरा फूल कढ़ा मेजपोश पीला,
वृक्ष खुली पुस्तक हर पृष्ठ फड़फड़ाया।
बहुत दिनों बाद मुझे धूप ने बुलाया।

पैरों में मखमल की जूती-सी-क्यारी,
मेघ ऊन का गोला बुनती सुकुमारी,
डोलती सलाई हिलता जल लहराया।
बहुत दिनों बाद मुझे धूप ने बुलाया।

बोली कुछ नहीं, एक कुर्सी की खाली,
हाथ बढ़ा छज्जे की साया सरका ली,
बाँह छुड़ा भागा, गिर बर्फ हुई छाया।
बहुत दिनों बाद मुझे धूप ने बुलाया।

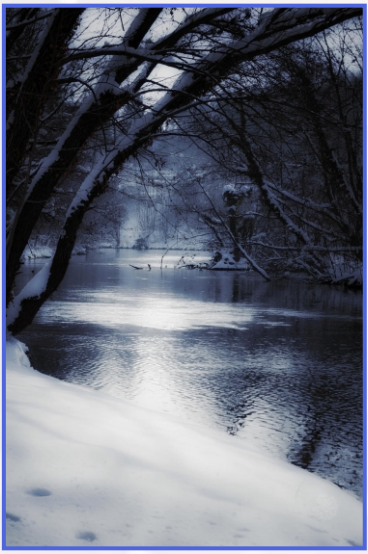

# बहारें जाड़े की

**नज़ीर अकबराबादी**

जब माह अगहन का ढलता हो तब देख बहारें जाड़े की
और हँस-हँस पूस संभलता हो, तब देख बहारें जाड़े की
दिन जल्दी-जल्दी चलता हो, तब देख बहारें जाड़े की
और पाला बर्फ़ पिघलता हो, तब देख बहारें जाड़े की
चिल्ला ग़म ठोंक उछलता हो, तब देख बहारें जाड़े की

तन ठोकर मार पिछाड़ा हो, और दिल से होती कुश्ती सी
ठर-ठर का ज़ोर उखाड़ा हो, बजती हो सबकी बत्तीसी
जब शोर हो फा-फू, हू-हू का, और धूम हो सी-सी-सी-सी की
कल्ले पे कल्ला लग-लग कर चलती हो मुँह में चक्की सी
हर दाँत चने सा दलता हो, तब देख बहारें जाड़े की

हर एक मकां में सर्दी ने आ बांध दिया हो ये चक्कर
जो हर दम कँप-कँप होती हो हर आन कड़ाकड़ और थर-थर
पैठी हो सर्दी रग-रग में और बर्फ़ पिघलता हो पत्थर
झड़-बंध महावट पड़ती हो और तिस पर लहरें ले-लेकर
सन्नाटा बाव का चलता हो, तब देख बहारें जाड़े की

हर चार तरफ़ से सर्दी हो, और सेहन खुला हो कोठे का
और तन में नीमा शबनम का हो जिस में खस का इत्र लगा
छिड़काव हुआ हो पानी का और ख़ूब पलंग भी हो भीगा
हाथों में पियाला शरबत का हो आगे इक फर्राश खड़ा
फ़र्राश भी पंखा झलता हो, तब देख बहारें जाड़े की

जब ऐसी सर्दी हो ऐ दिल तब रोज़ मज़े की घातें हों
कुछ नर्म बिछौने मख़मल के कुछ ऐश की लम्बी रातें हों
महबूब गले से लिपटा हो ओर कुहनी, चुटकी लेते हों
कुछ बोसे मिलते जाते हों कुछ मीठी-मीठी बातें हों
दिल ऐश-ओ-तरब में पलता हो, तब देख बहारें जाड़े की

हो फ़र्श बिछा ग़ालीचों का और पर्दे छोटे हों आ कर
इक गर्म अंगीठी जलती हो और शम्अ हो रौशन और तिस पर
वो दिलबर, शोख़, परी, चंचल, है धूम मची जिसकी घर-घर
रेशम की नर्म निहाली पर सौ नाज़-ओ-अदा से हँस-हँसकर
पहलू के बीच मचलता हो, तब देख बहारें जाड़े की

तरकीब बनी हो मजलिस की और काफ़िर नाचने वाले हों
मुँह उनके चांद के टुकड़े हों तन उनके रूई की गालें हों
पोशाकें नाज़ुक रंगों की और ओढ़े शॉल दुशाले हों
कुछ नाच और रंग की धूमें हों और ऐश में हम मतवाले हों
प्याले पर प्याला चलता हो तब देख बहारें जाड़े की

हर एक मकां हो ख़लवत का और ऐश की सब तैयारी हो
वो जान कि जिससे जी ग़श हो, सौ नाज़ से आ झनकारी हो
दिल देख 'नज़ीर' उस की छब को हर आन अदा पर वारी हो
सब ऐश मुहैया हो आकर जिस-जिस अरमान की बारी हो
जब सब अरमान निकलता हो, तब देख बहारें जाड़े की
जब माह अगहन का ढलता हो तब देख बहारें जाड़े की

# चांदनी बहकी हुई है

कीर्ति काले

शरद की स्वच्छ शीतल चांदनी बहकी हुई है
आओ हम भी इस बहक में बहक जाएँ

फूल, झरने, तितलियाँ, सुरभित हवाएँ,
कह रही हैं आज मौसम है प्रणय का
त्यागकर संकोच सारी वर्जनाएँ
सृष्टि की लय में अहम् के चिर विलय का

गगन महका हुआ, सारी धरा महकी हुई है
आओ हम भी इस महक में महक जाएँ

मिल रही नदियाँ समन्दर से लिपटकर
छटपटाकर चूमतीं तरु को लताएँ
बादलों की बाँह में बँधकर बिजलियाँ
कह रही हैं कसमसाहट की कथाएँ

काम दहका हुआ है, कामिनी दहकी हुई है
आओ हम भी इस दहक में दहक जाएँ

चांद, तारे, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र सारे
गा रहे जो गीत हम भी गुनगुना लें
काम के इस ताप में ख़ुद को तपाकर
भावना के स्वर्ण को कुन्दन बना लें

स्वप्न चहका हुआ है, कल्पना चहकी हुई है
आओ हम भी इस चहक में चहक जाएँ

प्रेम उत्सव में मगन सारी दिशाएँ
तुम भला क्यों दूर बैठे हो छिटककर
भाव को विस्तार देने के क्षणों में
क्या रहोगे यूँ स्वयं में ही सिमटकर

राग लहका हुआ है, रागिनी लहकी हुई है
आओ हम भी इस लहक में लहक जाएँ

# सर्दी नैनीताल गयी

ज्ञानप्रकाश आकुल

लंबी छुट्टी लेकर सर्दी नैनीताल गयी

अपने साथ ले गयी गेंदा दुपहरिया के फूल
उसे भेजने गये दूर तक सिंघड़ी लदे बबूल
गर्वीले टेसू की सारी ठसक निकाल गयी
लंबी छुट्टी लेकर सर्दी नैनीताल गयी

सूरज को दे गयी दिवस भर तपने का अधिकार,
कोयल से कह गयी गीत गाने हैं अबकी बार।
जाते जाते गेंहूँ में भी दाने डाल गयी
लंबी छुट्टी लेकर सर्दी नैनीताल गयी

सूरज अत्याचारी निकला उड़ा ले गया नीर
कोयल के गीतों की निकली बड़ी गरम तासीर
मुड़कर इधर न देखा जब से वह ननिहाल गयी
लंबी छुट्टी लेकर सर्दी नैनीताल गयी

ज्ञानप्रकाश आकुल

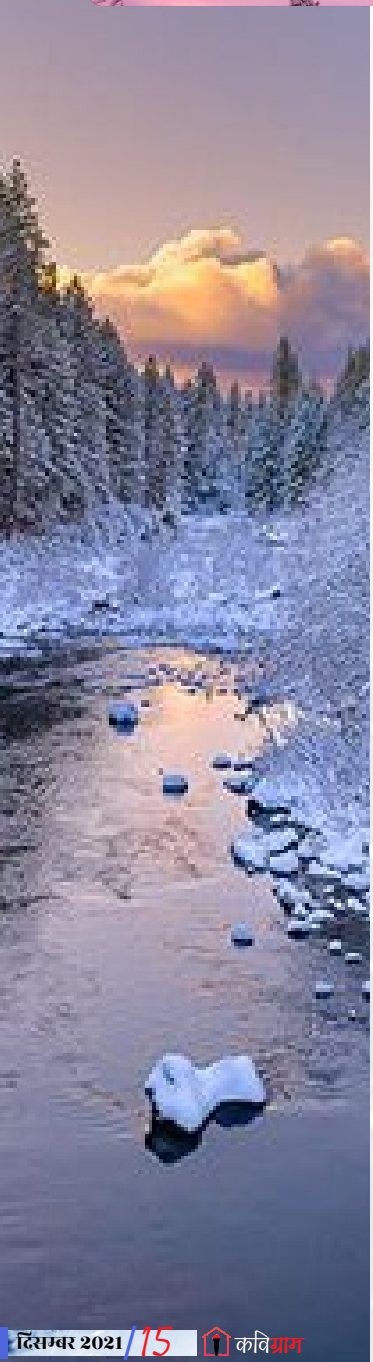

# ओ शरत!

रामधारी सिंह दिनकर

ओ शरत्, अभी क्या ग़म है?
तू ही वसन्त से क्या कम है?
है बिछी दूर तक दूब हरी
हरियाली ओढ़े लता खड़ी
कासों के हिलते श्वेत फूल
फूली छतरी ताने बबूल
अब भी लजवन्ती झीनी है
मन्जरी बेर रस-भीनी है
कोयल न (रात वह भी कूकी
तुझ पर रीझी, बंसी फूँकी)
कोयल न, कीर तो बोले हैं
कुररी-मैना रस घोले हैं
कवियों की उपमा की आँखें
खंजन फड़काती है पाँखें
रजनी बरसाती ओस ढेर
देती भू पर मोती बिखेर
नभ नील, स्वच्छ, सुन्दर तड़ाग
तू शरत् न, शुचिता का सुहाग
ओ शरत्-गंग! लेखनी, आह!
शुचिता का यह निर्मल प्रवाह
पल-भर निमग्न इसमें हो ले
वरदान मांग, किल्वष धो ले!

# ऐसे जाड़े

सागर ख़य्यामी

ऐसी सर्दी न पड़ी ऐसे न जाड़े देखे
दो बजे दिन को अज़ाँ देते थे मुर्ग़े सारे
वो घटा टोप नज़र आते थे दिन को तारे
सर्द लहरों से जमे जाते थे मय के प्याले
एक शायर ने कहा चीख़ के साग़र भाई
उम्र में पहले-पहल चमचे से चाय खाई

आग छूने से भी हाथों में नमी लगती थी
सात कपड़ों में भी कपड़ों की कमी लगती थी
वक़्त के पाँव की रफ़्तार थमी लगती थी
रास्ते में कोई बारात, जमी लगती थी
जम गया पुश्त पे घोड़े की बेचारा दूल्हा
खोद के खुरपी से साले ने उतारा दूल्हा

कड़कड़ाते हुए जाड़े की क़यामत तौबा
आठ दिन कर न सके लोग हज़ामत तौबा
सर्द था उन दिनों बाज़ार-ए मुहब्बत तौबा
कर के बैठे थे शरीफ़न से शराफ़त तौबा
वो तो ज़हमत भी क़दमचों की न सर लेते थे
जो भी करना था बिछौने पे ही कर लेते थे

सर्द गर्मी का भी मज़मून हुआ जाता था
जम के टॉनिक भी तो माजून हुआ जाता था
जिस्म लर्ज़े के सबब नून हुआ जाता था
ख़ासा शायर भी तो मजनून हुआ जाता था
कपकपाते हुये होंठो से ग़ज़ल गाता था
पक्के रागों का वो उस्ताद नज़र आता था

और भी सर्द हैं, माबूद ये एहसास न था
कब से आये नहीं महमूद यह एहसास न था
क़ुल्फ़ा खाते हैं कि अमरूद ये एहसास न था
नाक चेहरे पे है मौजूद ये एहसास न था
मुंह पे रूमाल रखे बज़्म से क्या आये थे
ऐसा लगता था वहाँ नाक कटा आये थे

सख़्त सर्दी के सबब रंग था महफ़िल का अजीब
एक कम्बल में घुसे बैठे थे दस बीस ग़रीब
सर्द मौसम ने किया पंडितो मुल्ला को क़रीब
कड़कड़ाते हुए जाड़े वो सुख़न की तक़रीब
दरमियाँ शायरो सामे के थमे जाते थे
इतनी सर्दी थी कि अशआर जमे जाते थे॥

# हम आजु नहइबै ना

**रमई काका**

अब तड़के का कसि कै नहाबु
हयँ भूलि गयीं भगतिनि चाची
लोटिया भर पानी डारयँ तौ
घर मा घूमयँ नाची-नाची

ई जाड़े मा हारी मनानेनि
पानी ते पंडित सिव किसोर
तन पर थ्वारै पानी चुपरयँ
मुलु मंत्र पढ़त हयँ जोर-जोर

बप्पा हम आजु नहइबै ना
लरिकउना मांगत माफी हय
दुइ कलसा पानी का करिबै
अब तो चुल्लू भर काफी हय

बहुरिया सास का भय कइकै
बसि सी-सी-सी सिसियाय दिहिस
आड़े मा धीती बदलि लिहिस
पानी धरती पै नाय दिहिस

# थर-थर काँपे गात

## अशोक मधुप

ठण्डी ने ऐसा किया, थर-थर काँपे गात।
मुँह-नाक इंजन बने, छोड़ रहे हैं भाप।।

ठण्डा है मौसम बड़ा, ठण्डी-सी मुस्कान।
टोपी में ही सुख मिले, ढकती सिर औ' कान।।

ठण्डी का मौसम बड़ा, ख़ूब बड़ा है नाम।
गर्म चाय देती बड़ा ठण्डी में आराम।।

पैसे वालों के लिये, है गर्मी और ठण्ड।
हरिया रोटी के लिये, रोज़ लड़ रहा जंग।।

शीत भगाने का चलो, राज़ बताया जाय।
देसी-घी में गुड़ पका, रोज़ खआया जाय।।

अशोक मधुप

# कवि कुनबा कलैण्डर (दिसम्बर)

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1 दिसम्बर | जन्मदिन | अंकित तोमर | अंकित तोमर |
| 3 दिसम्बर | जयन्ती | चन्द्रसेन विराट | |
| | जयन्ती | लाडसिंह गुर्जर | |
| | जन्मदिन | राहुल शेष | राहुल शेष |
| | पुण्यतिथि | बेकल उत्साही | |
| 5 दिसम्बर | जन्मदिन | महेश गर्ग बेधड़क | महेश गर्ग |
| 6 दिसम्बर | जयन्ती | ओ पी जैन हरियाणवी | |
| | जन्मदिन | मनवीर मधुर | मनवीर मधुर |
| 8 दिसम्बर | जयन्ती | बालकृष्ण शर्मा नवीन | |
| | जन्मदिन | राजीव राज | राजीव राज |
| 9 दिसम्बर | पुण्यतिथि | कैलाश गौतम | |
| | पुण्यतिथि | त्रिलोचन शास्त्री | |
| 11 दिसम्बर | जयन्ती | सुब्रमण्यम भारती | |
| | पुण्यतिथि | कवि प्रदीप | |
| 12 दिसम्बर | जन्मदिन | पवन दीक्षित | |
| | पुण्यतिथि | मैथिलीशरण गुप्त | |
| 14 दिसम्बर | जयन्ती | जॉन एलिया | |
| | पुण्यतिथि | शैलेन्द्र | |
| | जयन्ती | राजेन्द्र शर्मा | |
| 15 दिसम्बर | जयन्ती | वाहिद अली वाहिद | |
| | जन्मदिन | मनुव्रत वाजपेयी | मनुव्रत वाजपेयी |
| 16 दिसम्बर | जन्मदिन | सौम्या श्रीवास्तव | सौम्या श्रीवास्तव |
| 17 दिसम्बर | जयन्ती | अब्दुर्रहीम ख़ानख़ाना | |
| | जन्मदिन | ममता जोधा | ममता जोधा |
| | जन्मदिन | पंकज पलाश | पंकज पलाश |
| 18 दिसम्बर | जन्मदिन | वाशु पाण्डेय | वाशु पाण्डेय |
| | पुण्यतिथि | अदम गोंडवी | |
| 19 दिसम्बर | जयन्ती | इन्दिरा गौड़ | |
| | जन्मदिन | गोविन्द व्यास | गोविन्द व्यास |
| 21 दिसम्बर | जन्मदिन | श्लेष गौतम | श्लेष गौतम |
| | पुण्यतिथि | पुरुषोत्तम वज्र | |
| 23 दिसम्बर | जयन्ती | रामवृक्ष बेनीपुरी | |
| 24 दिसम्बर | जयन्ती | रूपेश राठौर | |

# कवि कुनबा कलैण्डर (दिसम्बर)

| | | |
|---|---|---|
| 25 दिसम्बर | जयन्ती | धर्मवीर भारती |
| | जयन्ती | पुरुषोत्तम प्रतीक |
| | जयन्ती | माणिक वर्मा |
| | जयन्ती | अटल बिहारी वाजपेयी |
| | जन्मदिन | यशपाल यश |
| | पुण्यतिथि | पीरूलाल बादल |
| | पुण्यतिथि | प्रताप दीक्षित |
| 26 दिसम्बर | जन्मदिन | बुद्धिसेन शर्मा |
| | जन्मदिन | सत्यप्रकाश सत्य |
| | पुण्यतिथि | जगन्नाथ विश्व |
| | पुण्यतिथि | माधव दरक |
| 27 दिसम्बर | जयन्ती | मिर्ज़ा ग़ालिब |
| 28 दिसम्बर | पुण्यतिथि | सुमित्रानन्दन पन्त |
| 29 दिसम्बर | जन्मदिन | मंज़र भोपाली |
| | पुण्यतिथि | विश्वेश्वर शर्मा |
| 30 दिसम्बर | जन्मदिन | आलोक श्रीवास्तव |
| | पुण्यतिथि | दुष्यन्त कुमार |
| | जन्मदिन | बलराम श्रीवास्तव |
| 31 दिसम्बर | जयन्ती | बुद्धिप्रकाश पारीक |
| | जयन्ती | रतन सिंह रतन |

यशपाल यश

बुद्धिसेन शर्मा

मंज़र भोपाली

आलोक श्रीवास्तव

बलराम श्रीवास्तव

KAVIGRAM

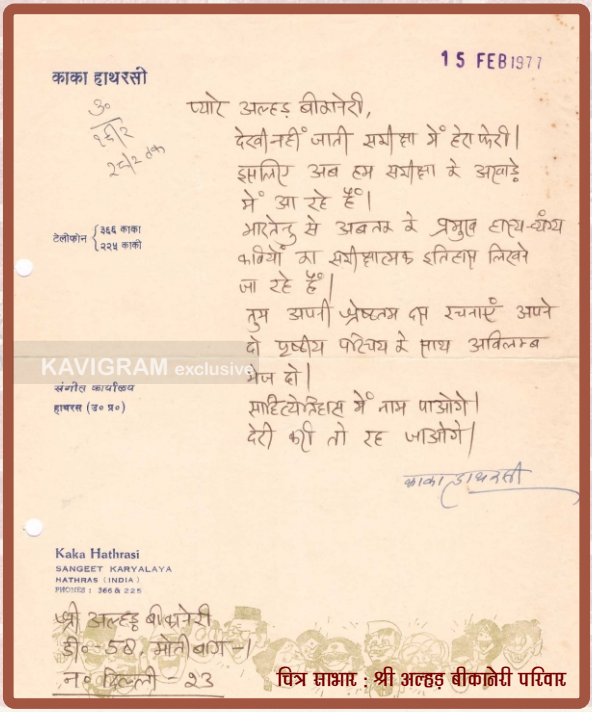



काका हाथरसी

15 FEB 1977

टेलीफोन { ३६६ काका / २२५ काकी }

प्यारे अल्हड़ बीकानेरी,
देखी नहीं जाती समीक्षा में हेरा फेरी।
इसलिए अब हम समीक्षा के अखाड़े
में आ रहे हैं।
भारतेन्दु से अब तक के प्रमुख हास्य-व्यंग्य
कवियों का समीक्षात्मक इतिहास लिखने
जा रहे हैं।
तुम अपनी श्रेष्ठतम दस रचनाएँ अपने
दो पृष्ठीय परिचय के साथ अविलम्ब
भेज दो।
साहित्येतिहास में नाम पाओगे।
देरी की तो रह जाओगे।

काका हाथरसी

KAVIGRAM exclusive

संगीत कार्यालय
हाथरस (उ० प्र०)

Kaka Hathrasi
SANGEET KARYALAYA
HATHRAS (INDIA)
PHONES : 366 & 225

श्री अल्हड़ बीकानेरी
डी०-58, मोती बाग-I
न० दिल्ली - 23

चित्र साभार : श्री अल्हड़ बीकानेरी परिवार

15 फरवरी 1977 को श्री अल्हड़ बीकानेरी के नाम
श्री काका हाथरसी का एक पत्र

**कवि-सम्मेलन संग्रहालय में कवि-सम्मेलन के पुराने चित्र, निमन्त्रण पत्र, चिट्ठियाँ, कतरनें तथा अन्य दस्तावेजों को संग्रहीत करने का कार्य प्रगति पर है। दाहिनी ओर दिये गये लिंक पर स्पर्श करके आप इस खण्ड के अन्य चित्र देख सकते हैं**

कवि सम्मेलन संग्रहालय

# काव्य कॉर्नर

काव्य कॉर्नर फाउंडेशन सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त, रजिस्टर्ड, ट्रेडमार्क्ड एवं CSR सर्टिफाइड NGO है। संस्था कला साहित्य संस्कृति के साथ-साथ विज्ञान एवं समाज सेवा को पूर्णतः समर्पित है। काव्य कॉर्नर फाउंडेशन की विचारधारा "नेक नीयत" को भरपूर स्नेहाशीष प्राप्त हो रहा है और संस्था अपनी उपस्थिति व विस्तार विभिन्न प्रान्तों व अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर करने में सफल हो रही है । संस्था से जुड़े गुणीजनों का स्नेहाशीष ही संस्था के लिए उर्जास्रोत है।

काव्य कॉर्नर फाउंडेशन के साथ ही, एक्लवयं क्रेएशन की वेबसाइट व मोबाइल एप्प भी जल्द ही लॉन्च होने जा रहा है। दर्जन से भी अधिक व्हाट्सएप समूह होने के साथ-साथ संस्था के साथ आठ हजार से भी अधिक कला साधकों का स्नेहाशीष है और संस्था सरकारी आयोजनों व विभिन्न प्रकार के छोटे-बड़े कार्यक्रमों के साथ-साथ समाजसेवी योजनाओं (जैसे शिक्षा, हेल्थकैम्प आदि) के लिए अग्रसर है। समय-समय पर संस्था द्वारा मास्क, कंबल, कपड़े, पाठ्य एवं खाद्य सामग्री वितरण भी किया जाता है। संस्था के सोशल मीडिया पर अभी तक करीब-करीब पांच हज़ार भी अधिक रचनाएँ व चित्रकारों द्वारा बनाई गई चित्रकलाएं, स्कैच आदि बैनर के रूप में खूबसूरत प्रस्तुतिकरण के साथ प्रकाशित की जा चुकी हैं। साहित्य के लिए सालों से निरंतर कार्यरत संस्था अभी तक साढ़े तीन सौ से अधिक कार्यक्रम आयोजित कर चुकी है।

भारत के राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद जी ने गत वर्ष कहा, "भारत एक संभावित मानसिक स्वास्थ्य महामारी का सामना कर रहा है"। यह कथन बिल्कुल सत्य है किन्तु भारत जैसे देश में हम और आप इन मुद्दों पर चर्चा करने से बचते हैं । एक अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ है कि

इसी वर्ष में, भारत की 14% आबादी मानसिक स्वास्थ्य संबंधी बीमारियों से पीड़ित है, जिसमें 45.7 मिलियन लोग अवसाद संबंधी विकारों से और 49 मिलियन लोग चिंता संबंधी विकारों से पीड़ित है। कोविड-19 महामारी ने इस मानसिक स्वास्थ्य संकट को और भी बढ़ा दिया है। जिससे किसी भी उम्र का जातक अछूता नही रहा, चाहे फिर लोकडाउन के कारण स्कूल जाने से वंचित हुए बच्चे हों, आज का युवा हो या उम्रदराज़ वरिष्ठ नागरिक ही क्यों न हों। लगभग हर कोई किसी न किसी स्तर पर मानसिक परेशानी से जूझ रहा है। आंकड़े कहते हैं कि मानसिक बीमारी की वजह से हर 40 सेकेंड में एक इंसान की जान चली जाती है। यह चौंकाने वाला आंकड़ा बताता है कि मानसिक विकारों के बारे में बात करना कितना ज़रूरी है और आप इससे कैसे सामना कर सकते हैं।

संस्था शारारिक स्वास्थ के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य की महत्ता को समझते हुए इस विषय पर अधिक से अधिक लोगो को जागरुक करने में प्रयासरत है, और इसी सत्र में समय-समय पर "डॉक्टर्स टॉक" का आयोजन करती रहती है जिसमें संस्था के साथ जुड़े वर्ल्ड क्लास मनोचिकित्सकों व मेडिकल प्रॉफेशनल्स का पैनल विशेष भूमिका निभाता आ रहा है।

काव्य कॉर्नर फाउंडेशन की संस्थापिका एवं राष्ट्रीय अध्यक्षा स्वयं एक साहित्यकार समाजसेवी होने के साथ-साथ मेडिकल माईक्रोबियोलॉजिस्ट भी हैं अपने श्रेष्ठ कार्यों से बहुत से सम्मान से सम्मानित की जा चुकी हैं।

यदि आप संस्था से या अपने क्षेत्र की काव्य-कॉर्नर फाउंडेशन कार्यकारिणी से जुड़ना चाहते हैं तो संपर्क कर सकते हैं। समाज को हम बनाते हैं, हमें समाज नहीं, इसलिए अच्छाइयाँ बाँटें! काव्य कॉर्नर

# ख़ास तौर से चौरासी

**प्रो. अशोक चक्रधर**

भाग 2

'अमरीका जाने के कई अवसर पहले भी आए थे, पहला सन् उन्नीस सौ चौरासी में और दूसरा सन् उन्नीस सौ सतासी में'। यह पंक्ति मैंने पिछली बार लिखी थी और कहा था कि इन प्रस्तावित यात्राओं के बारे में बाद में बताऊंगा, लेकिन लगता है कि अभी बताना होगा। दरअस्ल, 'कवितैव कुटुम्बकम्' के पहले भाग को पढ़कर राजीव जी बोले, चौरासी और सतासी के बारे में अभी बता दीजिए ना, फिर तिरानबे पर आइए'। मैंने उनकी बात मान ली है। 84 और 87 के बारे में संक्षेप में बता रहा हूं। वैसे, न्योते सिर्फ़ दो ही नहीं थे, पुराने काग़ज़ और डायरियां खंगालीं तो देखा कि तिरानबे तक तो अमरीका के कई आमंत्रण मिल चुके थे।

अब चौरासी की बात तो ये है कि आदरणीय काका हाथरसी जी हमारे सनलाइट कॉलोनी वाले घर में आए हुए थे, बोले, 'लल्ला, एक महीना के ताईं चल मेरे संग अमरीका!' प्रस्ताव अच्छा था। मैं जाने का नब्बे प्रतिशत मन बना चुका था, पर तभी हाथरस से डॉ. वीरेंद्र तरुण का एक मार्मिक पत्र मिला। डॉ. वीरेंद्र तरुण के बारे में मंचीय कवि समाज के प्राय: सभी लोग जानते हैं कि वे काका जी के साथ कवि रूप में जाते थे, लेकिन वे वयोवृद्ध काका जी के निजि सहायक की भूमिका भी निभाते थे। वे हाथरस के सरकारी 'प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र', में कम्पाउंडर रह चुके थे तथा होमियोपैथी और आयुर्वेद के प्राथमिक ज्ञाता डॉक्टर थे। काका जी की निजी आवश्यकताओं के साथ उनका उपचार भी कर देते थे। परिचारक ही नहीं, पर्योपचारक यानी परिउपचारक भी थे।

काका जी उनके लिए आयोजकों से अलग से पैसा नहीं ठहराते या ठहरवाते थे, बल्कि अपने इच्छित पारिश्रमिक में उनका जोड़कर

अपनी राशि बताते थे। आयोजकों को एक कवि के स्थान पर दो मिल जाते थे। फिर अपने पारिश्रमिक का पंद्रह प्रतिशत उन्हें दे दिया करते थे, जिसे देने के बाद उनका इच्छित पारिश्रमिक निकल आता था। बड़ा जटिल-सा लगने वाला सरल फ़ॉर्मूला था। यह फ़ॉर्मूला प्राय: बाहर वालों को बताया नहीं जाता था।

इस प्रकार तरुण जी गुप्त मानदेय के साथ कवि-सम्मेलनों में पर्याप्त आदरेय बने हुए थे। हृदय से सेवा-भावी, हाथरसी शैली के छंद-रचयिता और बचपन में अपने प्रमोटर के रूप में, तरुण जी मुझे पसंद थे। 1966 में बिजली कॉटन मिल के सुरुचि उद्यान में मेरा काव्य-पाठ सुनने के बाद, वे मुझे अपने हैल्थ सैंटर में आयोजित होने वाली संध्या-कालीन काव्य गोष्ठियों में बुलाने लगे। मैं अपनी साइकिल से पहुंच जाया करता था। वहीं मेरी भेंट हाथरस के अनेक युवा और प्रेम-काव्य रचने वाले अधेड़ कवियों से हुई। कुछ अच्छे कवि मेरे अंतरंग मित्र बने। जैसे विजय देव शर्मा, प्रेमचंद जैन 'निराश', मतवाला और मेरी साइकिल में पंचर लगाने वाले कवि श्री हीरालाल सुमन। ये सारी बातें बहुत विस्तार चाहती हैं, पर मैं तरुण जी के 1984 के पत्र पर आता हूं। उन्होंने लगभग ऐसा लिखा था— 'तौ पंडत! अमरीका जाय रहे औ! एक दूसरे पंडत के पेट पै लात मारि कै। हमारे पेट पै लात मत मारौ लल्ला जी! दस-पंद्रह साल ते काकू के संग कवि-सम्मेलनन में हमवैं ऊ रौनक लगाई ऐ लल्ला जी! तभी से अपनी डाक्टरी लगभग बंद ऐ। तुमारे पास तौ सौ तरह के काम ऐं प्रौफ़ेसर'! (तब तक मैं प्रोफ़ेसर नहीं बना था।) काकू ते मवैं कर देओगे तौ भौत पुन्न मिलैगौ! याद करौ, 'बाल कवि अशोक शर्मा' को मैंने कितने मंच दिलवाए। अब कर्जा उतारिबे का मौका आया है। एक करबद्ध प्रार्थना है कै काकू ते मत कहियौं।'

उनका पत्र ब्रज और खड़ी बोली के साथ उनकी मर्म-भाषा में लिखा हुआ था। उस पत्र के सारे वाग्जाल में तो मैं नहीं आया, लेकिन 'पेट पै लात मत मारौ' मुहावरे की लपेट में आ गया। मेरा नब्बे प्रतिशत अमरीका जाने का मन एक पल में शून्य के सूचकांक पर आ गया। उस दौरान दूरदर्शन के लिए अनेक प्रस्ताव-योजनाएं बनाई थीं, सोचा अध्यापन के साथ उन पर ध्यान केंद्रित करूंगा। कुछ श्री शरद दत्त के साथ पूरी होनी थीं, कुछ श्री कुबेर दत्त के साथ। बहरहाल, काकू को मैंने न जाने के कारण बतौर 'सौ तरह के काम' गिना दिए, जो उनको

किसी भी तरह से भारी या भरकम नहीं लगे। फिर उन्होंने एक चारा फेंका— 'वैसे तो तुम्हारा नाम लगातार फैल रहा है लल्ला, लेकिन अमरीका की इस यात्रा से दुनिया भर में झंडा गड़ जाएगा, चल!' मैं ख़ास उत्साहित नहीं हुआ, तो एक गंभीर मुस्कान के साथ बोले, 'देखो! हम तरुण को पंद्रह परसैंट देते, पर तुम्हें मिलेंगे तीस परसैंट'। मैंने मुस्कुरा कर अस्वीकार किया तो बोले— 'चल पैंतीस परसैंट'! मैं फिर भी हाथ जोड़ कर अस्वीकृति में मुस्काता रहा, 'परसैंट-वरसैंट का एक परसैंट भी लालच नहीं है काकू, इस बार तरुण जी को ले जाएं, अगली बार ज़रूर चलूंगा'।

सच्ची बताऊं, ऐसा नहीं था कि लालच नहीं था। था, कुछ तो था, पर पैसे का नहीं था। अरमान अमरीका को देखने का था। अरमान भी नहीं, एक कुतूहल जैसा था कुछ। कैसा है वो देश जो अपनी दादागिरी के आगे पूरी दुनिया को कुछ समझता ही नहीं है। कैसा है वो देश जो पूरी दुनिया को हथियार भी बेच रहा है। तीसरी दुनिया पर दया दिखाते हुए कर्ज़ा भी देता है और अनेक तरह से ब्याज भी वसूलता है। अब की बात भिन्न है, लेकिन उन दिनों मेरी राय अमरीका के बारे में अच्छी नहीं थी। वहां हमारे देश के लोगों को कितना सम्मान मिल रहा है। परेशानी में तो नहीं हैं। बहरहाल, अमरीका जाने और उसे जानने का एक अच्छा मौका था जो देखते-देखते हाथ से फिसल चुका था। तरुण जी के प्रति अपनी सदाशयता के स्वाभिमान के कारण मेरा मलाल भी जल्दी ही मलिन हो गया। तरुण जी मेरी नेकी की नाव पर बिना मुझे धन्यवाद दिए चढ़ गए थे, पर नाव अभी चली कहां थी।

काकू डॉ. तरुण को अपने साथ लेकर अमरीका जाने ही वाले थे कि मुझे दूरदर्शन की ओर से एक विराट कवि-सम्मेलन आयोजित और संचालित करने का न्यौता मिला। विराट यानी एक घंटे का। फ़ोन आया था असिस्टैंट स्टेशन डायरैक्टर डॉ. कांता पंत का। मैं उन्हें पहले से जानता था। 'रेत की मछली' नामक उपन्यास की यशस्वी लेखिका। वे जब डॉ. धर्मवीर भारती की पत्नी थीं तब कांता भारती कहलाती थीं। ख़ैर, मैंने उनसे कहा कि कवि-सम्मेलन को विराट कह रही हैं, तो दो घंटे का तो होना चाहिए।

...हमारा इरादा तो एक घंटे करने का है अशोक। उसे भी दो भागों में दिखाएंगे। आधा घंटे से ज़्यादा के स्लॉट्स हमारे पास नहीं हैं।

...वो आप देखिए कांता जी, पर मेरा एक निवेदन और है। दूरदर्शन पर हास्य-व्यंग्य की निरंतर उपेक्षा हो रही है। इस बार एक शुद्ध हास्य-व्यंग्य कवि-सम्मेलन होना चाहिए। कम से कम दो घंटे का और लगभग बीस कवियों के साथ। दो बार में दिखाइए या चार बार में।

...क्या हमारे देश में हिंदी के इतने हास्य कवि हैं जो दो घंटे का सस्टेनेबल कार्यक्रम दे सकें? ...और उससे भी ज़्यादा ज़रूरी ये है कि दर्शक उसे झेल सकें! –उन्होंने कहा।

फिर अगले दिन उन्होंने कहा, 'तुम्हारा प्रस्ताव मंज़ूर हो गया। हास्य-व्यंग्य कवि-सम्मेलन ही होगा। कवियों की लिस्ट बनाओ। कुबेर दत्त तुम्हारे प्रोड्यूसर रहेंगे। हां, सुनो! काका हाथरसी का नाम लिस्ट में सबसे ऊपर होना चाहिए!'

मैंने उनके लिए हिंदी और उर्दू के पच्चीस हास्य-व्यंग्य कवियों की सूची बना दी। सूची में काका जी का नाम सबसे ऊपर लिख दिया। पर वे तो तीन-चार दिन बाद अमरीका जाने वाले थे। होगा सो देखा जाएगा। कार्यक्रम के प्रोड्यूसर कुबेर दत्त थे। 'नई कविता' के पथ के अनुगामी। उन्हें अपनी तथाकथित साहित्यिक छवि पर बड़ा गुमान था। पर मेरे साथ उनकी पटरी अच्छी बैठ जाती थी क्योंकि आकाशवाणी-दूरदर्शन में हमारा अनुभव-पथ लगभग समान था। मैंने उनसे पूछा—'क्या हम काका जी की रिकॉर्डिंग पहले कर सकते हैं'? वे उल्लसित होकर बोले, 'कल बुला लो प्यारे! ईएनजी यूनिट लेकर कहीं आउटडोर में शूट करते हैं'।

वह कवि-सम्मेलन बहुत लोकप्रिय हुआ। पं. गोपाल प्रसाद व्यास की अध्यक्षता, मेरा संचालन। हम दोनों के अतिरिक्त बीस कवि और। सर्वश्री ओम प्रकाश आदित्य, विश्वनाथ विमलेश, शैल चतुर्वेदी, सुरेंद्र शर्मा, माणिक वर्मा, सुरेश उपाध्याय, सरोजिनी प्रीतम... एक थे कटक के इस्माइल आज़र, उनकी हिकली ग़ज़ल ने तो हंसा-हंसा कर मार ही डाला था। याद होगी—'मेरा द द दिल जो त त तेरे पास है, ब ब बाप का म म माल है'?

'काका जी को सुनने के लिए, अब हम अमेरिका से जुड़ते हैं लाइव', मैंने कहा, और स्क्रीन पर प्रकट हो गए काका जी— 'मैं पाताल लोक से बोल रहा हूं....' अशोक चक्रधर (शेष अगले अंक में)

*डॉ. सोनरूपा विशाल हिन्दी कवि-सम्मेलन की परम्परा पर अनवरत शोधकार्य करती हैं। हाल ही में उन्होंने हिन्दी की वाचिक परम्परा की कवयित्रियों के परिचय की एक शृंखला तैयार की है, जिसमें अनेक जानी-अनजानी कवयित्रियों के व्यक्तित्व तथा कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है। कविगाम ने इस उल्लेखनीय शोधकार्य को एक स्तम्भ के रूप में अपने पाठकों तक पहुँचाने का निर्णय लिया है। कोकिला-कुल नामक यह स्तम्भ हर कड़ी में आपका परिचय एक कवयित्री से कराएगा।*

# सुभद्रा कुमारी चौहान

देश के लिए समर्पित राष्ट्रीय चेतना की प्रथम सत्याग्रही कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान का नाम साहित्य एवं स्वतन्त्रता आन्दोलन के इतिहास में सर्वदा अंकित रहने वाला नाम है। सुभद्रा कुमारी चौहान को देशभक्ति के संस्कार बचपन से ही प्राप्त हुए थे। तत्कालीन समय में परतन्त्र भारत में प्रत्येक भारतवासी के रक्त में देशप्रेम का उबाल चरम पर था। ऐसे में सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपनी कविताओं और कर्मक्षेत्र दोनों में समानता रखकर देशहित में अपना अविस्मरणीय योगदान दिया। सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपने भीतर की भावनाओं और जज़्बे को सिर्फ पन्नों पर ही नहीं उतारा, बल्कि ज़मीनी तौर पर भी जिया। सुभद्रा जी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के असहयोग आन्दोलन में भाग

लेनेवाली पहली भारतीय महिला थीं। उन्होंने भारत की आज़ादी की लड़ाई में सक्रिय भूमिका निभायी जिसकी वजह से कई बार उन्हें जेल भी जाना पड़ा। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से लोगों को आज़ादी की लड़ाई में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। उस समय कवि-सम्मेलन भी जन जनजागरण के महत्त्वपूर्ण माध्यम हुआ करते थे। उन मंचों पर सुभद्रा कुमारी चौहान की उपस्थिति राष्ट्रीय चेतना के स्वर की उपस्थिति का पर्याय हुआ करती थी।

सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म 16 अगस्त 1904 को उत्तर प्रदेश में इलाहाबाद के पास निहालपुर में हुआ था। उन्हें बचपन से ही कविताएँ लिखने का शौक़ था। नौ साल की उम्र में उन्होंने पहली कविता लिखी। ये कविता उन्होंने एक नीम के पेड़ पर लिखी थी। उनके कुल दो कविता संग्रह और तीन कथा संग्रह प्रकाशित हुए। उन दो कविता संग्रहों का नाम हैं - मुकुल और त्रिधारा। इन संग्रहों में संग्रहीत कविताएँ जन-जन तक प्रचलित हो गईं। इनमें देशप्रेम की कविताएँ यथा, 'झाँसी की रानी'; 'वीरों का कैसा हो बसंत'; 'झाँसी की रानी की समाधि'; 'जलियांवाला बाग़ में बसंत'; 'राखी की चुनौती'; 'विदा' बहुत प्रसिद्ध हुईं। बाल कविताओं में 'कोयल'; 'पानी और धूप'; 'कदम्ब का पेड़'; 'खिलौनेवाला' जैसी कविताएँ ख़ूब पसन्द की गईं।

इनकी तमाम रचनाओं में 'झाँसी की रानी' कविता सबसे ज़्यादा प्रसिद्ध है। ये कविता आज तक लोगों की कण्ठहार बनी हुई है। सुभद्रा जी ने बाल कविताएँ भी ख़ूब लिखीं।

इनके तीन कहानी संग्रह भी प्रकाशित हुए हैं- मोती, उन्मादिनी और सीधे-साधे चित्र। सुभद्रा कुमारी चौहान ने कुल छियालीस कहानियाँ लिखीं और अपनी व्यापक कथा दृष्टि से वे एक लोकप्रिय कथाकार के रूप में भी हिन्दी साहित्य जगत् में सुप्रतिष्ठित हैं। कहते हैं सुभद्रा कुमारी चौहान की वाणी इतनी ओजस्वी थी कि जब वो कविता पाठ करती थीं या अपने विचार व्यक्त करती थीं तो लाखों की भीड़ उन्हें सुनने को एकत्र हो जाया करती थी।

वे विधानसभा सदस्य भी रहीं। मात्र 44 वर्ष की आयु में कार दुर्घटना में इनकी मृत्यु हो गयी। इनकी मृत्यु के बाद इनकी बेटी सुधा चौहान ने इनकी जीवनी लिखी जिसका नाम था 'मिला तेज से तेज'। इस जीवनी को पढ़कर इनके व्यक्तित्व के कई पहलू उजागर होते हैं।

सुभद्रा जी आर्थिक दृष्टि से बहुत सम्पन्न नहीं थीं। पति श्री लक्ष्मण सिंह भी देशप्रेमी थे। वे भी अनेक आन्दोलनों में सक्रिय रहे। सुभद्रा जी देशहित में एवं समाज हित में जब भी ज़रूरत होती तब तन-मन के साथ धन भी ख़र्च कर देती थीं। एक समाज सेविका के रूप में भी इन्होंने अपना उल्लेखनीय योगदान दिया। इन्होंने स्त्री शिक्षा के पक्ष में तथा बालविवाह एवं सतीप्रथा के विरोध में अपनी आवाज़ बुलन्द की। इनकी मृत्यु के बाद जबलपुर में एक विशाल प्रतिमा भी लगायी गयी। जो उनके लिए जनमानस की श्रद्धा का अत्यन्त सुन्दर उदाहरण है। भारतीय डाकतार विभाग ने 6 अगस्त 1976 को सुभद्रा कुमारी चौहान के सम्मान में 25 पैसे का एक डाक-टिकट जारी किया।

भारतीय तटरक्षक सेना ने 28 अप्रैल 2006 को सुभद्राकुमारी चौहान की राष्ट्रप्रेम की भावना को सम्मानित करने के लिए नये नियुक्त एक तटरक्षक जहाज़ को सुभद्रा कुमारी चौहान का नाम दिया है।

कवयित्री महादेवी वर्मा और सुभद्रा कुमारी चौहान सहेलियाँ थीं। दोनों एक ही विद्यालय में पढ़ती थीं। लेकिन दोनों की लेखन शैली में अन्तर था। सुभद्रा जी ममतामयी, सरल, सहज व्यक्तित्व थीं। यही उनकी रचनाओं में भी नज़र आता है। सुभद्रा कुमारी चौहान की रचनाओं में दो स्वर मुख्य हैं- देशप्रेम और वात्सल्य।

अपने व्यक्तित्व की तरह वे सहज, सरल और सीधा लेखन करती थीं। कविताओं में शिल्प का कौशल दिखाने का उनका कोई मन्तव्य नज़र नहीं आता। लगता है कि जैसे भाव उनके मन में उमड़ते थे वे जस का तस काग़ज़ पर उतार दिया करती थीं। इसीलिए उनकी रचनाएँ जनसामान्य द्वारा ग्राह्य हुईं। सोनरूपा विशाल

# धूमधाम से मनाया गया काका हाथरसी समारोह

12 नवम्बर, नयी दिल्ली। राजधानी के प्यारेलाल भवन में काका हाथरसी पुरस्कार ट्रस्ट तथा राजस्थान क्लब के संयुक्त तत्वावधान में 'काका हाथरसी समारोह' का आयोजन किया गया।

समारोह में लोकप्रिय हास्य कवि सरदार मनजीत सिंह को काका हाथरसी हास्य रत्न सम्मान प्रदान किया गया तथा सुप्रसिद्ध संगीत साधक डॉ मुकेश गर्ग को काका हाथरसी आजीवन संगीत साधना सम्मान से अलंकृत किया गया।

समारोह के मुख्य अतिथि डॉ हर्षवर्द्धन ने दोनों अलंकरण प्रदान किये तथा काका हाथरसी के साहित्यिक योगदान को रेखांकित करते हुए सारगर्भित उद्बोधन भी दिया।

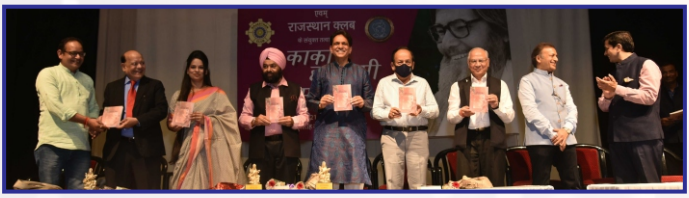


सम्मान अर्पण के अतिरिक्त काका हाथरसी समारोह में माननीय डॉ हर्षवर्द्धन के करकमलों से सुविख्यात कवयित्री सुश्री मनीषा शुक्ला के प्रथम गीत संग्रह 'मीठा काग़ज़' का लोकार्पण भी हुआ। पद्मश्री सुरेंद्र शर्मा ने मनीषा शुक्ला को बधाई देते हुए कहा कि बहुत समय बाद हिन्दी के इतने श्रेष्ठ गीत पढ़ने को मिले हैं।

प्रभात प्रकाशन की ओर से सभी अतिथियों को काका हाथरसी का साहित्य भेंट किया गया तथा काका हाथरसी ट्रस्ट के मैनेजिंग ट्रस्टी श्री अशोक गर्ग ने इस अवसर पर काका हाथरसी की रचनाएँ भी सुनाईं।

काका समारोह में एक हास्य कवि सम्मेलन का भी आयोजन किया गया, जिसमें पद्मश्री सुरेन्द्र शर्मा, अरुण जैमिनी, महेन्द्र अजनबी, वेदप्रकाश वेद, मनीषा शुक्ला, महेश गर्ग बेधड़क और सरदार मनजीत सिंह ने काव्यपाठ किया। कवि सम्मेलन का संचालन हास्य कवि चिराग़ जैन ने किया।

इस अवसर पर काका हाथरसी कुटुम्ब के अतिरिक्त साहित्य जगत् की अनेक हस्तियां भी दर्शक दीर्घा की शोभा बढ़ा रही थीं। सर्वश्री गजेन्द्र सोलंकी, गुणवीर राणा, अनिल अग्रवंशी, अना देहलवी, अजय अंजाम, सोनरूपा विशाल, राजीव राज, रसिक गुप्ता, शम्भू शिखर, मंजू शाक्या, कल्पना शुक्ला, प्रवीन अग्रहरि, कुलदीप त्रिपाठी और इकराम राजस्थानी समेत अनेक महत्त्वपूर्ण चेहरे काका समारोह के दौरान दर्शक दीर्घा में उपस्थित रहे। ■

# काका हाथरसी ट्रस्ट द्वारा सम्मानित हास्य-व्यंग्यकारों की सूची

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1975 | श्री ओमप्रकाश आदित्य | 1998 | श्री सूर्यकुमार पाण्डेय |
| 1976 | श्री विश्वनाथ विमलेश | 1999 | श्री अरुण जैमिनी |
| 1977 | श्री शैल चतुर्वेदी | 2000 | डॉ. शेरजंग गर्ग |
| 1978 | श्री माणिक वर्मा | 2001 | श्री मुकुट बिहारी सरोज |
| 1979 | श्री सुरेन्द्र शर्मा | 2002 | डॉ. हरीश नवल |
| 1980 | श्री शरद जोशी | 2003 | श्री महेन्द्र अजनबी |
| 1981 | श्री हुल्लड़ मुरादाबादी | 2004 | श्री गुरु सक्सेना |
| 1982 | श्री सुरेश उपाध्याय | 2005 | श्री नीरज पुरी |
| 1983 | डॉ. अशोक चक्रधर | 2006 | श्री ओम व्यास |
| 1984 | श्री सूंड फैज़ाबदी | 2007 | श्री आशकरण अटल |
| 1985 | श्री के पी सक्सेना | 2008 | श्री सुरेन्द्र दुबे |
| 1986 | श्री अल्हड़ बीकानेरी | 2009 | डॉ. प्रवीण शुक्ल |
| 1987 | डॉ. गोविन्द व्यास | 2010 | डॉ. सुरेन्द्र दुबे |
| 1988 | श्री ब्यंकट बिहारी पागल | 2011 | डॉ. सुरेश अवस्थी |
| 1989 | श्री सत्यदेव शास्त्री भोंपू | 2012 | डॉ. आलोक पुराणिक |
| 1990 | श्री प्रदीप चौबे | 2013 | डॉ. प्रेम जनमेजय |
| 1991 | डॉ. सरोजिनी प्रीतम | 2014 | डॉ. सर्वेश अस्थाना |
| 1992 | श्री मधुप पाण्डेय | 2015 | श्री प्रदीप पन्त |
| 1993 | डॉ. राकेश शरद | 2016 | श्री वेदप्रकाश |
| 1994 | डॉ. बरसानेलाल चतुर्वेदी | 2017 | श्री तेजनारायण शर्मा |
| 1995 | श्री जैमिनी हरियाणवी | 2018 | श्री महेश गर्ग बेधड़क |
| 1996 | श्री घनश्याम अग्रवाल | 2019 | डॉ. पॉपुलर मेरठी |
| 1997 | श्री सरोज कुमार | 2020 | सरदार मनजीत सिंह |

# डॉ प्रवीण शुक्ल के स्वर्ण जन्मोत्सव पर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बहत्तर सम्मेलन सम्पन्न

हिंदी भवन, दिल्ली में "प्रवीण पर्व" के अंतर्गत ब्रज शुक्ल घायल स्मृति सम्मान समारोह और डॉ प्रवीण शुक्ल जन्मोत्सव समारोह डॉ कीर्ति काले के श्रेष्ठ संचालन में संपन्न हुआ । इस अवसर पर चिराग जैन को चतुर्थ "बृज शुक्ल घायल स्मृति सम्मान" प्रदान किया गया। इस अवसर पर एक पंचरत्न कवि-सम्मेलन का भी आयोजन हुआ जिसमें श्री चिराग जैन, सुश्री सोनरूपा विशाल, सुनहरी लाल तुरंत, अजय अंजाम और अभिराज पंकज ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत की। डॉ प्रवीण शुक्ल के 50 वीं वर्षगांठ के उपलक्ष में डॉ प्रवीण शुक्ल के अभिनंदन समारोह का आयोजन हुआ और उन्हें सम्मानित किया गया। डॉ कीर्ति काले, डॉ राजीव राज, सत्यपाल सत्यम और सपना सोनी ने डॉ शुक्ल की कविताओं का सस्वर काव्य-पाठ करके सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस समारोह में "जो मिसाल बन गए" शीर्षक से अंकित प्रोडक्शन ने भी एक फिल्म प्रस्तुत की। इसके साथ-साथ डॉ शुक्ल की 23 वीं पुस्तक "जैसा दिखा वैसा लिखा" का विमोचन भी किया गया। समारोह की अध्यक्षता दिल्ली विधानसभा के अध्यक्ष श्री रामनिवास गोयल ने की। मुख्य अतिथि के रूप में मेरठ के सांसद श्री राजेन्द्र गोयल की उपस्थिति

रही। इसके अतिरिक्त समारोह में पद्मश्री सुरेंद्र शर्मा, श्री मंगल नसीम, श्री जगदीश मित्तल, श्री बी एल गौड़, श्री प्रवेश शर्मा, श्री गजेंद्र सोलंकी, श्री राजेश चेतन, श्री गुनवीर राणा, श्री अनिल अग्रवंशी, श्री शम्भू शिखर, श्री सौरभ सुमन, श्री अमित शर्मा, सुश्री मनीषा शुक्ला, सुश्री कल्पना शुक्ला, श्री रसिक गुप्ता जी सहित शताधिक कवियों और सहित्यकारों की उपस्थिति रही। "डॉ प्रवीण शुक्ल जन्मोत्सव समारोह" को एक महोत्सव के रूप में मनाने के लिए कुल बहत्तर काव्य-समारोह आयोजित किये गए, जिनकी सूची अधोलिखित है :

1 नवम्बर 2021

1. शब्द साधक संस्था कवि गोष्ठी / सपना सोनी, राजीव राज
2. शब्द कोष साहित्यिक समूह / संयोजक-सुश्री सपना सोनी
3. राष्ट्रीय कवि चौपाल / कवि गोष्ठी / संयोजक-श्री शिवशंकर सोनी, सुश्री सपना सोनी
4. प्रेरणा दर्पण एवं साहित्य 24 / काव्य गोष्ठी

2 नवम्बर 2021

1. राष्ट्रीय कवि संगम / कवि गोष्ठी / संयोजक-श्री शिवशंकर सोनी, सुश्री सपना सोनी
2. चाय पर कविता / लाइव गोष्ठी (streamyard) / संयोजन -सुश्री कल्पना शुक्ला, श्री काली शंकर सौम्य
3. प्रेरणा दर्पण साहित्यिक एवं सांस्कृतिक मंच / सांस्कृतिक संध्या / संयोजन-डॉ कीर्ति काले

3 नवम्बर 2021

1. अदभुत इंडिया / कवयित्री गोष्ठी / संयोजन - कल्पना शुक्ला
2. शब्द तुम्हारे, भाव हमारे / साहित्य दर्पण / गीत गोष्ठी / इंस्टाग्राम / प्रस्तुति-डॉ राजीव राज, सपना सोनी
3. रोटरी क्लब, दौसा / दीवाली पूजन किट का वितरण / संयोजन-शिवशंकर सोनी, सपना सोनी, पुनीत प्रिंटर्स
4. गीत-गगन / साहित्य 24 /संयोजन-डॉ कीर्ति काले
5. पंच ऋचाएं (काव्य पाठ) / पहल / संयोजक-डॉ राजीव राज

4 नवम्बर 2021

1. अखिल भारतीय साहित्य कला संगम / कवि गोष्ठी / संयोजन-श्री कृष्ण कांत मधुर / संचालन- श्री पी के आज़ाद

2. भरतनाट्यम् नृत्य / प्रेरणा दर्पण एवं साहित्य 24 / संयोजक - डॉ कीर्ति काले, हरिप्रकाश पाण्डे

5 नवम्बर 2021

1. काव्य तूणीर / डॉ प्रवीण शुक्ल से बातचीत / सौरभ सुमन

2. हरि-बोल / अलबेली परिवार दौसा / गोविंद देव जी मंदिर परिसर / संयोजन- सपना सोनी / सहयोगी -शिवशंकर सोनी, रोनक खण्डेलवाल, विनोद गौड़

3. डॉ प्रवीण शुक्ल : व्यक्तित्व एवं कृतित्व / वक्ता- डॉ अर्जुन सिसोदिया / संयोजक-मोहित शौर्य

4. राष्ट्रीय कवि संगम गोष्ठी / गूगल मीट / मार्गदर्शन - श्री पीके आज़ाद / संयोजन कल्पना शुक्ला

5. राष्ट्रीय युवा चेतना परिषद इटावा / दस्तक / संयोजक-डॉ राजीव राज /प्रसारण साहित्यिक संस्था पहल

6. कवि-सम्मेलन / इंद्रप्रस्थ विस्तार / श्री प्रमोद अग्रवाल

7. सांस्कृतिक संध्या / प्रेरणा दर्पण / संयोजक-डॉ कीर्ति काले

8. आओ गुनगुना लें / गीत समूह सरस काव्य संध्या / संयोजक - श्री जयसिंह आर्य, संजय जैन / डॉ कीर्ति काले

6 नवम्बर 2021

1. म्यूजिक पैलेस, दौसा / संगीतमय प्रस्तुति / संयोजक- शिवशंकर सोनी, सुश्री सपना सोनी

2. ऑस्ट्रेलियांचल हिन्दी ई-पत्रिका एवं डॉ० कुँअर बेचैन स्मृति न्यास आस्ट्रेलिया / डॉ० प्रवीण शुक्ल-मित्रों की दृष्टि में

3. हिंदी हैं हम / कवि गोष्ठी /तंजानिया / श्री जितेंद्र जीतू

4. हरप्रसाद शास्त्री चैरिटेबल ट्रस्ट / गुलमोहर / live गोष्ठी

5.हास्य कवियों की नजर में डा प्रवीण शुक्ल / वार्ता / पहल समूह / संयोजक सपना सोनी / सहसंयोजक डा राजीव राज

6. सांस्कृतिक संध्या / प्रेरणा दर्पण / संयोजक-डॉ कीर्ति काले

7 नवम्बर 2021

1. करणी मंदिर सेवा समिति / वृक्षारोपण / दौसा, राजस्थान

2. कवि-गोष्ठी एवं डॉ प्रवीण शुक्ल की कविताओं का पाठ परंपरा / संयोजक-श्री राज निगम, सुश्री इंदु निगम

3. योगांचल चिकित्सा केंद्र, गाज़ियाबाद / रूपा एकांत जी द्वारा डॉ. प्रवीण शुक्ल की कविताओं की प्रस्तुति / देवप्रभा प्रकाशन के फेसबुक पटल पर

4. प्रेरणा दर्पण एवं साहित्य 24 / सांस्कृतिक संध्या / संयोजक - डॉ कीर्ति काले, हरिप्रकाश पाण्डे

5. प्रेरणा दर्पण - किस्से कवि सम्मेलनों के / डॉ प्रवीण शुक्ल विशेष / संयोजन-संचालन - डॉ कीर्ति काले / सहभागिता -श्री दिनेश रघुवंशी, सपना सोनी

6. कवि सम्मेलन / पंवार वाणी फाउंडेशन, मेरठ / संयोजक-डॉ हरिओम पंवार

8 नवम्बर 2021

1. कलरव / सरस्वती संगीत केंद्र / छात्रों द्वारा प्रवीण शुक्ल की कविताओं की संगीतमय प्रस्तुति / संयोजक-सपना सोनी

2. डॉ प्रवीण शुक्ल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर परिचर्चा एवं काव्य गोष्ठी / संयोजक नरेश चंद्र जोशी

3. प्रेरणा दर्पण, साहित्य 24 एवं डॉ कीर्ति काले फेंस क्लब / सांस्कृतिक संध्या / संयोजक - डॉ कीर्ति काले हरिप्रकाश पाण्डे

4. प्रेरणा दर्पण साहित्यिक एवं सांस्कृतिक मंच / किस्से कवि सम्मेलनों के प्रवीण पर्व विशेष / सहभागिता - श्री उदयप्रताप सिंह, डॉ राजीव राज / संयोजन एवं संचालन डॉ कीर्ति काले

5. देवप्रभा प्रकाशन के पेज पर डॉ. प्रवीण शुक्ल से साक्षात्कार "मेरे प्रिय कवि प्रवीण" / साक्षात्कारकर्ता डॉ. चेतन आनंद

9 नवम्बर 2021

1. रंग-तरंग / डॉ प्रवीण शुक्ल की कविताओं का पाठ / स्टार मेकर / संयोजक-सपना सोनी

2. काव्य-गोष्ठी एवं संवाद / साहित्य सरगम / विनोवा कुंज, रोहिणी, दिल्ली / संयोजक-श्री अनिल अग्रवंशी

3. काव्य गोष्ठी एवं परिचर्चा / साहित्य का आँगन / कुमार राघव
4. काव्य गोष्ठी / बृजभूमि साहित्यिक मंच / संयोजक- श्री राजकुमार रंजन
5. कवि गोष्ठी एवं परिचर्चा / सुख-दु:ख के साथी / संयोजक- श्री प्रेमबिहारी मिश्रा
6. उमंग तरंग / बच्चों द्वारा प्रान्तीय भाषाओं के गीतों पर नृत्य प्रस्तुति / संयोजक- सपना सोनी / समन्वयक- दीपक शर्मा
7. मेरे पापा / देवप्रभा प्रकाशन / पत्रकार वेलफेयर एसोसिएशन / डॉ. प्रवीण शुक्ल की बिटिया वंशिका शुक्ला से बातचीत / संयोजक-श्री चेतन आनंद
8. शिवोहम साहित्यिक मंच / डॉ प्रवीण शुक्ला जी की रचनाओं का कवियों द्वारा वाचन / संयोजन- भावना तिवारी
9. सांस्कृतिक संध्या / साहित्य 24 एवं डॉ कीर्ति काले फेंस क्लब / संयोजक - कीर्ति काले, हरिप्रकाश पाण्डे
10. व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर परिचर्चा एवं काव्य गोष्ठी / काव्य-कॉर्नर / संयोजक - डॉ पूजा सिंह गंगानिया, श्री राजपाल यादव
11. काव्य-गोष्ठी एवं परिचर्चा / शब्दाक्षर संस्था / संयोजक - श्रीमती संतोष संप्रीति
12. प्रेरणा दर्पण, किस्से कवि सम्मेलनों के / श्री बालस्वरूप राही, अनिल जोशी, उर्वशी उर्वी / संयोजक-डॉ कीर्ति काले

10 नवम्बर 2021

1. डॉ प्रवीण शुक्ल : एक बहुआयामी व्यक्तित्व / मेवाड़ ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन्स, वसुंधरा / संयोजक- डॉ. चेतन आनंद
2. कविताएँ प्रवीण शुक्ल की / बाल कवियों द्वारा काव्य-पाठ / मैप स्टूडियो / संयोजक-डॉ अर्जुन सिसोदिया, मोहित शौर्य
3. उत्सव जन्मदिन का / सोनोटेक / संयोजक-श्री राजेश चेतन
4. कवि गोष्ठी / राष्ट्रीय कविसंगम / संयोजक-सुश्री मंजू शाक्य
5. अंतस् की 28वीं काव्य गोष्ठी / भारत माता मंदिर / केक कटिंग / सम्मान एवं संवाद / संयोजन –पूनम माटिया
6. काव्य गोष्ठी एवं परिचर्चा / लिपि, जर्मनी / योजना शाह जैन

7. शिक्षक मित्रों की नज़र में डॉ प्रवीण शुक्ल / दोस्त मुखर्जी स्कूल परिवार / गूगल मीट / संयोजक- डा. एकांत शर्मा

8. काव्य संध्या / डॉ कीर्ति कीर्ति काले फैन क्लब / संयोजक- सुश्री गार्गी कौशिक, सुश्री बबीता पांडेय

9. कविता सम्मेलन / अखिल भारतीय साहित्य परिषद, और लोक संस्कृति फाउंडेशन / देवप्रभा प्रकाशन / चेतन आनंद

10. सांस्कृतिक संध्या / साहित्य 24 एवं भगत हॉस्पिटल / संयोजक - डॉ कीर्ति काले, हरिप्रकाश पाण्डे

11. किस्से कवि सम्मेलनों के / प्रेरणा दर्पण साहित्यिक एवं सांस्कृतिक मंच / प्रवीण शुक्ल विशेष / संयोजक- कीर्ति काले

11 नवम्बर 2021

1. कवि गोष्ठी / काव्य पुष्प मंच / संयोजक- प्रांजुल अस्थाना

2. कवि गोष्ठी एवं परिचर्चा / हिंदी साहित्य अकादमी राजस्थान / संयोजक-श्री हलचल हरियाणवी

3. काव्य-गोष्ठी / काव्य-पूजा पटल / संयोजक-डॉ राजीव राज

4. स्वर्ण महोत्सव / सृजनी (usa) / संयोजक-कपिल कुमार

5. सांस्कृतिक संध्या / साहित्य 24 एवं भगत फार्म / संयोजक - डॉ कीर्ति काले, हरिप्रकाश पाण्डे

6. 'डॉ. प्रवीण शुक्ल,- साहित्यकारों की नज़र में।' / स्पंदन संस्था / देवप्रभा प्रकाशन / संचालन डॉ. चेतन आनंद

7. किस्से कवि सम्मेलनों के / प्रेरणा दर्पण / डॉ प्रवीण शुक्ल विशेष / संयोजक डॉ कीर्ति काले

12 नवम्बर 2021

1. आलोक प्रवीण पर्व का / हिंदी साहित्य अकादमी / संयोजक-सुश्री अनामिका अम्बर, श्री सौरभ सुमन

2. पंचरत्न कवि सम्मेलन एवं डॉ प्रवीण शुक्ल अभिनन्दन समारोह / साहित्य प्रेमी मंडल / हिंदी भवन, दिल्ली / संयोजक- निर्दोष शर्मा, पी के आज़ाद

13 नवम्बर 2021

1. आभार ईश्वर का / सुंदर कांड पाठ एवं भजन संकीर्तन / मानस मंच / संयोजन-सुश्री संजना शुक्ला

पुष्पांजलि के
नवीनतम अंक के
अवलोकनार्थ
क्लिक करें

**देश की पहली साहित्यिक ई-पत्रिका जो पढ़ी और सुनी भी जा सकती है तथा जिसमें संगीत के लिंक्स भी है जिनसे निर्मल आनंद उठाया जा सकता है।**

मूल्य : मात्र आपकी मुस्कान

**सामने दिए गए चिह्न को दबाने से आपका सन्देश स्वचलित रूप से हमें पहुँच जाएगा और नियमित पत्रिकाएँ भेजने के लिए आपका मोबाइल नं. पंजीकृत हो जाएगा।**

**8610502230** (केवल संदेश हेतु)
(कृपया अपना नाम व शहर का नाम भी लिखें)

KAVIGRAM.COM

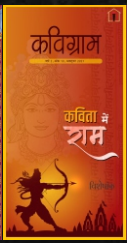

- मुखपृष्ठ
- प्रकाशन
- काव्यलोक
- समाचार लोक
- पुराने चावल
- फिल्म निर्माण
- कविग्राम पत्रिका
- कवि-सम्मेलन बुकिंग
- कवि-सम्मेलन संग्रहालय
- सम्पर्क

- कविग्राम फेसबुक समूह
- कविग्राम फेसबुक पेज
- कविग्राम ट्विटर
- कविग्राम इंस्टाग्राम
- कविग्राम टेलीग्राम